(मुद्रित पृष्ठों की संख्या = छह)

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, इन्दौर

कक्षा - आठ विषय - हिन्दी

वसंत भाग-3

पाठ 12 - सुदामा चरित

मौड्यूल - 1

प्रस्तुतकर्त्री

मंजू देवी, प्र.स्ना.अ.-वरि.मान(हिन्दी/ संस्कृत)

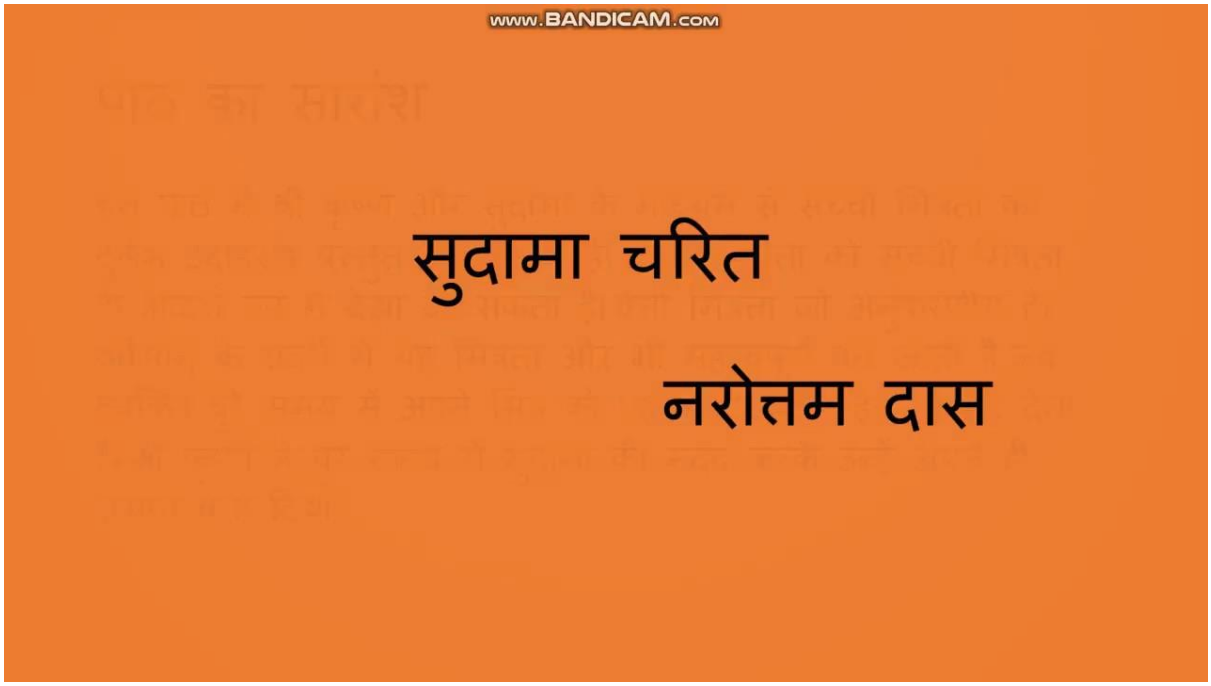

कवि-परिचय

सुदामा चरित- नरोत्तमदास

कवि नरोत्तमदास का जन्म विक्रम संवत 1550 तदनुसार सन् 1493 ईसवी के लगभग वर्तमान उत्तरप्रदेश के सीतापुर जिले में हुआ और मृत्यु विक्रम संवत1605 तदनुसार सन् 1542 ईसवी में हुई। इनकी भाषा ब्रजभाषा है। हिन्दी साहित्य में ऐसे लोग विरले ही हैं जिन्होंने मात्र एक या दो रचनाओं के आधार पर हिन्दी साहित्य में अपना स्थान सुनिश्चित किया है।इनकी यह रचना बहुत ही सरस और हृदयग्राहिणी है और *कवि* की भावुकता का *परिचय* देती है।

0846CH12

12 सुदामा चरित

सीस पगा न झँगा तन में, प्रभु! जाने को आहि बसे केहि ग्रामा।
धोती फटी-सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह को नहिं सामा।।
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकिसों बसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा।।

ऐसे बेहाल बिवाइन सों, पग कंटक जाल लगे पुनि जोए।
हाय! महादुख पायो सखा, तुम आए इतै न कितै दिन खोए।।
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।।

कछु भाभी हमको दियो, सो तुम काहे न देत।
चाँपि पोटरी काँख में, रहे कहो केहि हेतु।।

आगे चना गुरुमातु दए ते, लए तुम चाबि हमें नहिं दीने।
स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सों, "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।।
पोटरि काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा रस भीने।
पाछिलि बानि अजौ न तजो तुम, तैसई भाभी के तंदुल कीन्हे।।"

शब्द - अर्थ	शब्द - अर्थ
सीस - सिर पर	धाम - भवन
पगा - पगड़ी	बेहाल - बुरा हाल
झँगा - कुरता	बिवाइन - फटी एड़ियाँ
तन - शरीर	पग - पैर
प्रभु - ईश्वर	कंटक - काँटे
आहि - आया है	पुनि - बार-बार
केहि - कहाँ	जोए - देखने
दुपटी - अंग वस्त्र	महादुख - बहुत दुख
अरु - और	इतै - यहाँ
उपानह - जूते	करुना - दया
द्विज - ब्राह्मण	नैनन - आँखों के
दुर्बल - कमजोर	काहे - क्यों
चकिसों - चकित	चाबि- चबा लिए
बसुधा - धरती	सुधा - अमृत
अभिरामा - सुंदरता	तंदुल - चावल

प्रश्न - उत्तर

प्रश्न 1. सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: सुदामा की दीनदशा को देखकर दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया। परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले कि उन्हीं आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

प्रश्न2. "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।" पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत दोहे में यह कहा गया है कि जब सुदामा दीन-हीन अवस्था में कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण उन्हें देखकर व्यथित हो उठे। श्रीकृष्ण ने सुदामा के आगमन पर उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी मँगवाया परन्तु सुदामा की दुर्दशा देखकर श्रीकृष्ण को इतना कष्ट हुआ कि वे स्वयं रो पड़े और उनके आँसुओं से ही सुदामा के पैर धुल गए। अर्थात् परात में लाया गया जल व्यर्थ हो गया।

प्रश्न3. "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"
(क) उपर्युक्त पंक्ति कौन, किससे कह रहा है?
(ख) इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।
(ग) इस उपालंभ (शिकायत) के पीछे कौन-सी पौराणिक कथा है?

उत्तर: (क) उपर्युक्त पंक्ति श्रीकृष्ण अपने बालसखा सुदामा से कह रहे हैं।

(ख) अपनी पत्नी द्वारा दिए गए चावल संकोचवश सुदामा श्रीकृष्ण को भेंट स्वरूप नहीं दे पा रहे हैं। परन्तु श्रीकृष्ण सुदामा पर दोषारोपण करते हुए इसे चोरी कहते हैं और कहते हैं कि चोरी में तो तुम पहले से ही निपुण हो।

(ग) बचपन में जब कृष्ण और सुदामा साथ-साथ सांदीपन ऋषि के आश्रम में अपनी-अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। तभी एक बार जब श्रीकृष्ण और सुदामा जंगल में लकड़ियाँ एकत्र करने जा रहे थे तब गुरूमाता ने उन्हें रास्ते में खाने के लिए चने दिए थे। सुदामा, श्रीकृष्ण को बिना बताए चोरी से चने खा लिए थे । श्रीकृष्ण उसी चोरी का उलाहना सुदामा को दे रहे थे ।

-इति-